समाज विकासमाला

परमहंस की कहानियां

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ७५

परमहंस की कहानियां

रामकृष्ण परमहंस की लिखी सीख देनेवाली कहानियां

संग्रहकर्त्ता
महावीरप्रसाद पोद्दार

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में यदि सरकार की ओर से कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों। यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान रखी गई है और जहांतक हो सका है, कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। विषय ऐसे लिये गये हैं जिनमें पाठकों की खास रुचि हो। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर पाठक इनके बारे में हमें अपनी राय लिखें। यदि पुस्तकों की भाषा-शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें। हम उनपर विचार करेंगे और उन सुझावों के आधार पर किताबों को और ज्यादा अच्छी और उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

रामकृष्ण परमहंस का नाम तुमने सुना होगा। वह ऊचे दर्जे के आदमी हुए हैं और उन्होंने बड़ी अच्छी-अच्छी बातें कही हे और लिखी हैं। इस किताब में उनकी लिखी कुछ कहानिया दी गई हैं। कहानियां हैं छोटी-छोटी, पर उनमें कोई-न-कोई सीख जरूर है। अगर हम किसी चीज को दिल से चाहें तो हो नहीं सकता कि वह हमें न मिले, मेहनत से सबकुछ हो सकता है, भगवान सबकी मदद करते हैं, अपनी करनी के लिए आदमी खुद जिम्मेदार है, हर काम में चतुराई चाहिए, यह इन कहानियों को पढ़कर पता चलता है।

आप किताब को ध्यान से पढ़ें और इसकी कहानियों को दूसरों को भी पढ़वायें।

—सम्पादक

परमहंस की कहानियां

: १ :

सरल विश्वास

भगवान को पाने के लिए आदमी न जाने कितने जोग-जप और तपस्या करता रहता है, लेकिन अगर वह सरल विश्वास से उसको पुकारे तो सहज में मिल जाता है।

किसी विधवा के एक छोटा-सा लड़का था। नाम था उसका जटिल। वह घर से दूर एक पाठशाला में पढ़ने जाता था। विधवा बड़ी गरीब थी। अपना कहने के लायक उसके और कोई न था। जटिल की पाठशाला के रास्ते में एक जंगल पड़ता था। बहुत छोटा होने की वजह से जंगल से गुजरने में उसे बड़ा डर लगता था। एक दिन मां से जटिल ने रोकर कहा, "मां, उस रास्ते अकेले जाते मुझको बड़ा डर लगता है। कोई आदमी मुझे साथ दो, नहीं तो मैं पाठशाला नहीं जाऊंगा।"

जटिल की बात से मां को चोट लगी, बोली, "बेटा, आदमी कहां से लाऊं। जंगल में तेरा बड़ा भाई रहता

है, उसका नाम है मधुसूदन। डर लगे तो उसे पुकार लिया कर। वह तेरे साथ चला जायगा।"

मां की बात से जटिल को बड़ी खुशी हुई। दूसरे दिन जब वह जंगल से गुजर रहा था तो उसने जोर से पुकारा---"मधुसूदन भाई, ओ मधुसूदन भाई, आओ-आओ, मुझे बड़ा डर लग रहा है।"

किसीको आते न देखकर और कोई आवाज न पाकर जटिल और जोर-जोर से पुकारने लगा। उसको पक्का भरोसा था कि मधुसूदन भैया जरूर आवेंगे।

जटिल की सरल भक्ति से भगवान का आसन डोल गया। एक बालक का रूप धरकर वह हँसते-हँसते जटिल के पास आकर बोले, "ले मैं आ गया।"

अब जटिल की खुशी का ठिकाना न रहा। रोज मधुसूदन भैया उसे पाठशाला पहुंचा जाते और फिर लौटते हुए घर के रास्ते पर कर जाते। दोनों खूब बातें करते, खेलते। कैसी मौज थी!

दिन बीतते रहे। इसी बीच एक दिन गुरूजी की मां गुजर गईं। उनका क्रिया-कर्म होना था। सब लड़के अपनी-अपनी बिसात के अनुसार क्रिया के लिए कुछ-न-कुछ लाये। कोई चावल लाया, कोई दूध लाया, कोई पत्तल लाया। गुरूजी ने जटिल से पूछा, "जट्टा, तू क्या लायेगा?"

जटिल ने कहा, "मां से पूछकर बताऊंगा।"

उसने आकर अपनी मां से कहा। मां बोली, "बेटा, हम लोगों के पास गुरूजी को देने लायक क्या है? हम तो गरीब हैं। तू कल मधुसूदन भाई से कहना।"

छोटा होने पर भी जटिल बड़ा समझदार था। मां का दुख समझता था। दूसरे दिन पाठशाला जाते समय जटिल ने मधुसूदन से गुरूजी की बात कही। मधुसूदन भाई ने कहा, "उसकी क्या चिंता। कब है श्राद्ध?"

"कल।"

"अच्छा, गुरूजी से कहना कि श्राद्ध में जितना दही लगेगा, वह सब मैं दे दूंगा।"

जटिल ने गुरूजी से दही की बात कह दी। गुरूजी ने उसकी बड़ी तारीफ की। कहा, "जटिल हमारा बड़ा अच्छा लड़का है। लेकिन देखो भाई, दही में देरी न हो। कल ही श्राद्ध है।"

"जी, मैं कल सबेरे ही दे जाऊंगा।"

अगले दिन सब लड़के काम-काज में लगे थे, पर जटिल का अभी तक कोई पता नहीं था। गुरूजी परेशान थे। अगर वह दही लेकर न पहुंचा तो सारा खेल ही बिगड़ जायगा। एक लड़के की बात पर विश्वास करके मैंने अच्छा नहीं किया!"

वह ऐसा सोच रहे थे कि तभी एक लड़के ने गुरूजी

से कहा, "देखिए वह आ रहा है जटिल। वाह, कितना बड़ा मटका दही का ले आ रहा है !



जटिल के हाथ में छोटी-सी हड़िया देखकर गुरूजी आग-बबूला हो गये। उसके पास आते ही बोले, "तूने तो कहा था कि श्राद्ध का सारा दही तू लावेगा। और दही कहां है ?"

"जी, मैं छोटा हूं न। ज्यादा नहीं ला सकता था। इसलिए मधुसूदन भैया ने यह छोटी हड़िया दी है और कहा है कि इसीमें सबका काम हो जायगा।"

जटिल की बात सुनकर गुरूजी और तेज हो गये। दही की हाड़ी छीनकर एक लड़के को देकर बोले, "ले, यह दही दूसरे बर्तन में डाल दे और हड़िया उस बेवकूफ को वापस कर दे।"

इसके बाद जटिल को उन्होंने यह कहकर पीटना शुरू कर दिया कि तूने आज मेरी मां का श्राद्ध बिगाड़ा है। ले चख उसका मजा! उन्होंने इतना मारा कि वह बेचारा मार से बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

उधर एक दूसरी घटना घटी। जो लड़का दही की हाड़ी खाली करने गया था वह लौटकर बोला, "गुरूजी, बड़े अचम्भे की बात है। हड़िया में से दही निकलता ही जाता है, खतम ही नहीं होता।"

"अरे, यह क्या कहता है।" गुरूजी ने अचरज से कहा!

"गुरूजी, हड़िया में से जितना दही निकालता हूं, वह उतनी ही फिर भर जाती है।"

"अच्छा, तब तो हमारे जटिल ने सच्ची बात कही थी। ओह, मैंने इसको बेकार मारा-पीटा। अरे, कोई है, जरा पानी लाना और जरा पंखा देना।"

सब मिलकर जटिल के सिर पर और आंखों पर पानी छिड़कने लगे। दो आदमी हवा करने लगे। जरा देर के बाद जटिल ने आंखे खोलीं। गुरूजी ने बड़े प्यार

से उसे गोदी में उठा लिया और बोले, "बेटा, मैंने बिना समझे-बूझे तुमको पीटा। चोट ज्यादा लगी है क्या ?"

"नहीं, गुरूजी।"

"अच्छा यह बताओ कि दही तुमने कहां से पाया ?"

"मेरे मधुसूदन भैया ने दिया।"

"तुम्हारे मधुसूदन भैया कहां रहते हैं ?"

"जी, वह इसी जंगल में रहते हैं।"

"अच्छा, तो भाई, अपने मधुसूदन भैया को हमें दिखा दोगे ?"

"क्यों नहीं। आप मेरे साथ चलिए।"

गुरूजी और छात्रों की टोली जटिल के पीछे-पीछे चलने लगी। बन में जाकर जटिल ने जोर से मधुसूदन भैया को पुकारा। लेकिन यह क्या ! मधुसूदन भैया नहीं आये। जटिल बड़ी चिंता में पड़ गया। रो-रोकर फिर पुकारने लगा। तभी दूर से उसने मधुसूदन भैया की आवाज सुनी, "ओ जटिल, मैं आज नहीं आ सकता। तुमने सरल विश्वास के कारण मुझको पाया। तुम्हारे गुरूजी में और दूसरे छात्रों में तुम्हारे जैसा विश्वास नहीं है। वे मुझे नहीं देख सकते। उनके चले जाने पर ही मैं तुम्हारे पास आऊंगा।"

: २ :

पंडित और ग्वालिन

शास्त्र की बात सिर्फ पढ़ने और जानने से कुछ नहीं होता। शास्त्र पर विश्वास करके उसके अनुसार काम करने से फल मिलता है। जो लोग मुंह से एक बात कहते हैं और काम दूसरी तरह से करते हैं, उनसे धर्म नहीं होता।

गंगा-किनारे एक पंडित रहते थे। विद्या के भंडार थे, देश-विदेश में उनका खूब नाम था। एक ग्वालिन रोज सबेरे उनके यहां दूध दे जाती थी, लेकिन दूध पहुंचाने में उसे देर हो जाया करती थी। इसपर पंडितजी ने एक दिन ग्वालिन को डांटा। कहा "इतनी देर करके क्यों आती है ? तुझे और जल्दी आना पड़ेगा।"

ग्वालिन ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज, आप जितने सबेरे चाहें मैं दूध दे सकती हूं। मल्लाह सोकर बहुत अबेरे उठता है। नाव देर से मिलती है। देर हो जाती है।"

पंडितजी ने कहा, "मैं यह सब नहीं जानता, सबेरे दे सको तो दिया करो, नहीं तो मैं तुमसे नहीं लूंगा।"

ग्वालिन बहुत फिक्र करते हुए घर लौटी। घर उसका नदी-पार था। आलसी मल्लाह की वजह से ही उसे

दिक्कत थी। उस दिन शाम को ग्वालिन दूध के दाम लेने



फिर पंडितजी के यहां आई। वहां बहुत-से लोग इकट्ठे हो रहे थे और पंडितजी कथा बांच रहे थे। बड़ी सुंदर कथा हो रही थी, सब एकमन सुन रहे थे। ग्वालिन सब बातें नहीं समझी, फिर भी कथा उसको भाई। वह एक किनारे खड़ी होकर कथा सुनने लगी।

कथा में एक जगह पंडितजी ने कहा, "जो राम का नाम लेता है, वह अनायास इस संसार को तर जाता है।" यह बात ग्वालिन के मन में बस गई। उस दिन वह दूध

के दाम न ले सकी। रामनाम से भवसागर पार होने की बात सोचते-सोचते वह घर लौट आई।

पंडितजी ने कह दिया था कि आगे देर हुई तो दूध नहीं लेंगे। इसलिए दूसरे दिन ग्वालिन बड़े तड़के दूध लेकर पंडितजी के घर की ओर चली। नदी पर आई। बहुत चिल्लाने-पुकारने के बाद भी जब वह मल्लाह को नींद से जगा न सकी तो मन-ही-मन सोचने लगी-- पंडितजी ने कल कहा था कि राम का नाम लेकर अनायास सागर तरा जा सकता है। रामनाम से अगर सागर तरा जा सकता है तो इस नदी के पार होने में क्या धरा है! मैं भी कैसी बेवकूफ हूं! बस ऐसा सोचती वह राम की याद करते हुए नदी में उतर पड़ी। सरल विश्वास की कैसी अद्भुत महिमा है। ग्वालिन नदी पार कर गई।

आज ग्वालिन को खूब सबेरे आई देखकर पंडितजी ने पूछा, "आज इतनी जल्दी कैसे आ गई? बिना डांट के तुम माननेवाली नहीं थीं। आज मल्लाह ने कैसे पार कर दिया?"

ग्वालिन ने कहा, "मल्लाह तो अब भी सो रहा है। उसने मुझे पार नहीं किया।"

"तो फिर उड़कर आई क्या? मुझसे ठगी करती है!"

"देखिए, महाराज, मैं तो गंवार औरत हूं। मैं भला आपसे क्या ठगी करूंगी। आप ही ने मुझे आज तक ठगा है।"

"अच्छा, मैंने ठगा है!"

"जीहां, आप ही ने ठगा है। अबतक आपने कहां बताया कि रामनाम लेने से बड़ी आसानी से नदी पार की जा सकती है। वह तो संयोग से कल शाम मैंने आपकी कथा में सुन लिया।"

अब सब बात पंडितजी की समझ में आ गई। लेकिन सचमुच ग्वालिन रामनाम के बल पर नदी पार कर आई है, यह देखने की उनमें बड़ी उत्सुकता जागी। वह ग्वालिन के साथ-साथ नदी में उतरे। ग्वालिन राम का नाम लेकर पानी पर से ऐसे जाने लगी, मानो धरती पर चल रही हो। पंडितजी भी उसके पीछे-पीछे उतरे, लेकिन ग्वालिन-जैसा सरल विश्वास उनमें न होने से वह नदी में डूब गये।

: ३ :

किसान की प्रतिज्ञा

एक बार भयंकर सूखा पड़ा। महीने-के-महीने बीत गये। पानी बरसना तो दूर आसमान में बादल का एक टुकड़ा भी दिखाई नहीं देता था। देश में हाहाकार मच

गया। पानी की कमी से खेत सूखकर पत्थर हो गये थे। कुछ खेतों के बीच एक बड़ा पोखरा था, उसीमें से नाली निकालकर थोड़ा-बहुत जमीन को सींच रहे थे और खेती की कोशिश कर रहे थे।

जिनकी जमीन पोखरे से बहुत दूर थी, उनमें से भी एक-दो आदमी पोखरे का पानी अपनी जमीन में ले जाने की कोशिश कर रहे थे। कुछ आज, कुछ कल, इस तरह थोड़ी-थोड़ी करके नाली बना रहे थे, किंतु पानी उनके खेत तक पहुंच नहीं पा रहा था। इनमें से एक था रामू। वह एक दिन बहुत देर तक नाली बनाता रह गया। उसने हठ पकड़ ली थी कि चाहे जैसे हो, खेत में पानी पहुंचाकर ही मानूंगा।

दोपहर को बहुत देर तक वह घर नहीं पहुंचा तो उसकी स्त्री को बड़ी चिंता हुई। कुछ देर तक राह देखने के बाद वह खेत पर पहुंची। उसने देखा कि रामू बड़ी लगन से नाली बना रहा है। वह उसके पास बैठकर बोली, "इतनी देर हो गई, नहाने-खाने का नाम नहीं। इस धूप में कुदाल चला रहे हो। अब घर चलो, बाकी काम कल करना।"

रामू अपनी स्त्री की ओर देखकर बोला, "तू आ गई! अच्छा चल, जब तू कहती है तो कल ही सही।"

लेकिन इसी तरह कल-कल करते रामू के

खेत पर भी पानी न पहुंचा। कुदाल कंधे पर रखकर वह रोज खेत पर जाता। उसकी जमीन पोखरे से काफी दूर थी। पोखरे से पानी लेकर खेती करना आसान नहीं था। पोखरे के किनारे बैठा-बैठा वह सोचता और आसमान की ओर देखता। उसकी आंखें डबडबा आती थीं। आखिर बच्चे बिना खाये-पीये कैसे जिंदा रहेंगे।

एक दिन रामू रात भर सोचता रहा। खेत की फिक्र और बाल-बच्चों की दुर्दशा की बात सोचकर उसे जरा भी देर के लिए नींद नहीं आई। आखिर में उसने तय किया कि चाहे जो हो, कल खेत में जरूर पानी पहुंचाऊंगा।

दूसरे दिन सूरज के निकलने से पहले ही रामू अपनी कुदाल लेकर खेत की ओर रवाना हुआ और पोखरे से नाली बनाने लगा। बस उसे नाली की ही धुन लगी थी। दोपहर बीत चला। खेत से किसान लौट गये।

रामू को न आया देखकर उसकी स्त्री को बड़ी चिंता हुई। उसने लड़की से कहा, "बेटी, खेत पर जाकर देख तो कि इतना समय हो गया फिर भी वह क्यों नहीं आये। जा, तू बुलाकर ले आ। लड़की खेत पर गई। देखती क्या है कि रामू मिट्टी काटने में लगा है। लड़की ने कहा, "बाबू, घर चलो। आज छोड़ो, कल करना। मां खाना लिये बैठी है।"

लड़की की बात सुनकर रामू ने आंख उठाकर देखा, बोला, "तू इस धूप में क्यों आई ? जा, घर जा।"

लड़की ने कहा, "तुम भी चलो। कितनी देर हो गई है। कब नहाओगे ? कब खाओगे ?

राम बोला, "एक दिन नहाने-खाने में जरा देरी होगई तो क्या हो गया। जा तू घर। मैं ठहरकर आऊंगा।"

लड़की ने आग्रह करते हुए कहा, "नहीं, आज और काम करने की जरूरत नहीं, कल करना, अब घर चलो।"

रामू ने कहा, "नहीं, खेत में पानी पहुंचाये बिना आज मैं घर जानेवाला नहीं हूं। तुम लोग क्या भूखों मरोगे ? आसमान की हालत नहीं देखतीं ? मेरी लाड़ली बेटी, तुम घर जाओ। खेत में पानी लाकर ही मैं घर जाऊंगा।"

इसी तरह कह-सुनकर रामू ने लड़की को घर लौटा दिया। खेत में मानों आग बरस रही थी। रामू के बदन से टपाटप पसीना चू रहा था। पर उसको इसकी कोई परवाह न थी। वह आज खेत में पानी लाकर ही मानेगा।"

कितना ही समय और बीत गया। रामू घर नहीं लौटा। रामू की स्त्री परेशान हो गई। वह उसे बुलाने खुद खेत पर गई। रामू को स्त्री के आने की खबर भी न हुई। वह तो खोद-खोदकर नाली बनाने में जुटा था।

रामू का यह हाल देखकर स्त्री को बड़ा गुस्सा आया। बोली, "तुम भी अजीब आदमी हो, जी। दुनिया



भर के लोग खेत से कब के घर चले गये। तुम अब भी खोदने में लगे हो। हो गया काम, चलो घर, अब कल करना।"

स्त्री की बात सुनकर रामू ने उसकी ओर देखा, बोला, "तू यहां क्यों मरने आ गई। खेत में पानी पहुंचाये बिना आज मैं घर नहीं लौटनेवाला। अब थोड़ा ही काम बाकी है। तू घर जा।"

रामू जितना उसे समझाता, स्त्री उतना ही उसे घर ले जाने की जिद्द करती। किसी तरह उसको मानते न देखकर रामू ने उसपर कुदाल उठाई। वह डर के मारे घर भागी। रामू फिर काम में लग गया।

देखते-देखते शाम हो गई। रामू का काम भी करीब-करीब पूरा हो चला। नाली की खुदाई समाप्त हो गई। रामू ने झट पोखरे पर जाकर नाली का मुंह काट दिया। कल-कल करता हुआ पानी खेत में जाने लगा। किनारे खड़े होकर रामू कुछ देर तक उसे देखता रहा। फिर थैली से हुक्का-चिलम निकालकर तंबाकू भरकर पीने लगा। बाद में घर लौटकर स्त्री से बोला, "ला तेल दे, नहा लूं।"

नहा-धोकर और खा-पीकर रामू चैन से सो गया।

: ४ :

सर्वमंगला

सरल भाव से भगवान को एकमन से पुकारने पर वह दर्शन देते हैं। ध्रुव और प्रहलाद ने उनके दर्शन किये। वह जटिल बालक के साथ रोज खेलते थे। हमारे देश के कितने साधु-महात्माओं ने उनके दर्शन किये, उनकी गिनती नहीं की जा सकती।

एक गांव में एक ब्राह्मण रहता था। बड़ा गरीब था, लेकिन बहुत ही भक्त। मन से वह देवी की पूजा करता

था। लोगों के यहां दुर्गा-पाठ कर आता, उसीसे किसी तरह उसकी गुजर हो जाती थी। ब्राह्मण के एक लड़की थी। नाम था सर्वमंगला। रूप में लक्ष्मी, गुण में सरस्वती। वैसी सुंदर और कामकाज में होशियार लड़की सैकड़ों को तलाश किये न मिलती।

एक दिन उस इलाके का जमींदार किसी काम से उस गांव में आया। उसने लड़की को देखा। उसे वह इतनी पसंद आई कि उसने अपने लड़के से उसका विवाह कर दिया। विवाह के बाद सर्वमंगला ससुराल चली गई।

ब्राह्मण लड़की को बहुत प्यार करता था। लड़की के ससुराल जाने के बाद उसे बड़ी तकलीफ होने लगी, पर उपाय क्या था! विवाह के बाद लड़की पराई हो ही जाती है। जैसे-जैसे उसका दुख बढ़ता गया वह पूजा और दुर्गा-पाठ में अधिक लगने लगा। बड़े भाग्य से लड़की को बड़ा घर मिला था।

देखते-देखते दुर्गा-पूजा का अवसर आ गया। ब्राह्मण की बड़ी इच्छा थी कि वे लोग दुर्गामाई की पूजा करें। उसने अपनी स्त्री से यह बात कही। स्त्री बड़ी खुश हुई, पर बोली, "हम लोग तो बहुत गरीब हैं। मां की पूजा किस तरह करेंगे।"

ब्राह्मण ने जवाब दिया, "मां क्या बस धनियों की

ही मां हैं ! गरीब उसके कोई नहीं हैं। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। हमारे घर में जो चूनी-भूसी है, उसीसे हम मां के चरणों में दो फूल चढ़ावेंगे।"

सुनकर ब्राह्मणी बोली, "जब तुम्हारे मन में यह बात आ ही गई है तो मां की पूजा जरूर होगी।"

... ...

पूजा में अब देर नहीं थी। पति-पत्नी दोनों ने किसी तरह बारह रुपये इकट्ठे किये। ब्राह्मण एक अठन्नी लेकर कुम्हार के पास गया। बोला, "भाई, यह लो अठन्नी। मेरे लिए दुर्गामाई की छोटी-सी मूर्ति गढ़ दो।"

कुम्हार ने कहा, "ब्राह्मण देवता, पागल हुए हो क्या ? दुर्गा-पूजा करने की समाई तुममें कहां है ? और आठ आने में कहीं मूरती बनती है।"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "क्यों भाई, मां के चरणों में दो फूल चढ़ाने में समाई-बेसमाई की क्या बात है ? आठ आने में जैसी मूर्ति बना सको, बनादो।"

ब्राह्मण का भाव देखकर कुम्हार पिघल गया। उसने कहा, "अच्छा मैं मूरती बनाये देता हूं। अठन्नी मुझे नहीं चाहिए। मैं वैसे ही दे दूंगा।"

ब्राह्मण ने कहा, "यह बात नहीं होने की। पैसा तो तुम्हें लेना ही होगा।"

वह जबरदस्ती अठन्नी डाल आया।

सर्वमंगला की याद ब्राह्मणी को बनी थी। वह रोने लगी। ब्राह्मण ने कहा, "रोने से क्या होगा ? वे लोग बड़े आदमी हैं। उनके यहां कितनी बड़ी पूजा होगी। उनके इकलौते बेटे की बहू है। वह उसे कैसे आने देंगे।"

ब्राह्मणी मन को समझाना चाहती थी, लेकिन मां के दिल को किसी तरह तसल्ली नहीं होती थी।

कुम्हार ने एक सुंदर मूर्ति बना दी। पूजा में सिर्फ एक दिन बाकी रह गया था। तभी एक संकट आ गया। ब्राह्मणी की तबीयत खराब हो गई। वह ब्राह्मण से बोली, "तुम एक बार सर्वमंगला के घर चले जाओ।"

लाचार ब्राह्मण को लड़की के घर जाना पड़ा। लेकिन उन लोगों ने लड़की को नहीं भेजा। दुखित मन से ब्राह्मण लौट आया। जमींदार के घर से थोड़ी ही दूर निकला होगा कि पीछे से उसने किसीकी आवाज सुनी— "बाबा-बाबा, मैं आ रही हूं। ठहरिए, चलती हूं।"

आवाज सर्वमंगला की ही थी। ब्राह्मण ने मुड़कर देखा, सचमुच ही सर्वमंगला थी। ब्राह्मण ने कहा, "यह क्या, बेटी ! तू चली आई। तेरी सास क्या कहेंगी ?" सर्व-मंगला बोली, "तुम उसकी चिंता न करो। मैं उसका इंतजाम कर आई हूं।"

लड़की के आ जाने से मां की बीमारी बहुत-कुछ दूर हो गई। सर्वमंगला घर-भर में आनंद फैलाती फिरती।

पहले से वह और भी सुंदर हो गई थी। माता-पिता उसे देखकर फूले नहीं समाते थे।

बेटी इतने बड़े घर की बहू हो गई, तब भी जैसी थी, वैसी ही है। भगवान इस बच्ची का सुहाग अचल रखें!

... ...

पूजा के दो दिन बड़ी मौज से कट गये। तीसरे दिन सर्वमंगला ने पिता से कहा, "बाबा, गांववालों को खिलाना होगा।"

ब्राह्मण ने हँसकर कहा, "खिलाना तो होगा, बेटी, लेकिन कहां से खिलायेंगे? तुम्हारे बाबा के पास कहां है खिलाने को।"

सर्वमंगला ने जवाब दिया, "नहीं बाबा, तुमने जब पूजा बैठाई है तब गांववालों को न खिलाना क्या शोभा देगा?"

यह कहकर सर्वमंगला गांव में चली गई। ब्राह्मण मन-ही-मन हँसा—मेरी बेटी का ब्याह बड़े घर हो गया है न, इसलिए इसकी नजर भी बड़ी हो गई!

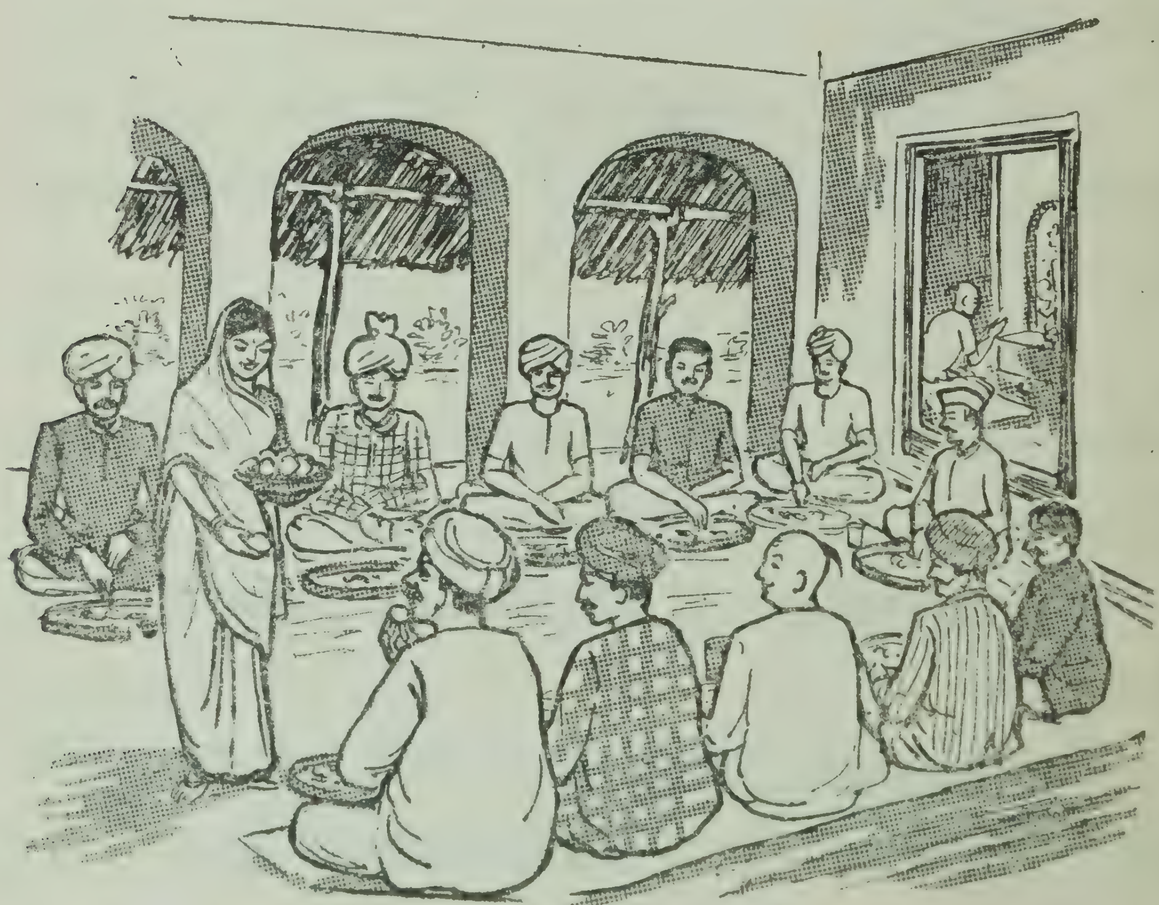
ब्राह्मण स्नान करके पूजा में बैठा। सर्वमंगला उसकी मदद करने लगी।

दुर्गा की मूर्ति से मानों प्रकाश फूट रहा था। देवी की ज्योति से सारे घर में उजाला फैल रहा था।

दोपहर को गांव के लोगों की टोली-की-टोली ब्राह्मण के दरवाजे पर आ डटी। सर्वमंगला सबको न्यौता जो दे आई थी। ब्राह्मण ने स्त्री से कहा, "देखती हो इस पगली का तमाशा।" ब्राह्मणी बड़ी फिक्र में पड़ी कि अब क्या होगा। सर्वमंगला ने कहा, "तुम लोग हैरान मत हो। मैं सबको बुलाकर लाई हूं। सबको मां की प्रसादी खिलाऊंगी।"

ब्राह्मण ने सबको आदर-सत्कार से बिठाया। उसके बाद पूजा-घर में जाकर एकमन से पुकारना शुरू किया, "मां, आज लाज रखो।"

सबके बैठ जाने पर सर्वमंगला देवी का प्रसाद ले



आई। बोली, "मेरे पिता बड़े गरीब हैं। आप लोगों की अच्छी तरह खातिरदारी करना उनके लिए मुश्किल है। आप लोगों ने कृपा करके उनके घर को अपने पैरों की धूल से पवित्र किया है। यह उनका बड़ा सौभाग्य है। अब आप सब देवी का प्रसाद लीजिए।"

इतना कहते ही प्रसाद से ऐसी सुगंध निकलने लगी कि सबके दिल उससे पुलकित हो गए। खा-पी चुकने के बाद सबने कहा, "ऐसा प्रसाद तो हमने कभी नहीं खाया।" थोड़े में ही उनका पेट ऐसा भर गया कि क्या कहें! उसके बाद सब खुशी-खुशी अपने-अपने घर चले गए।

सर्वमंगला ने पिता को पुकारा, "बाबा आइए, सब लोग चले गए।"

ब्राह्मण ने कहा, "वे हमें शाप देकर गए क्या, बेटी?"

सर्वमंगला बोली, "शाप क्यों देंगे? सब बड़ी खुशी से मां का प्रसाद खाकर गए हैं। अभी तो आधा प्रसाद रखा है। लो, तुम भी खाकर देखलो।"

ब्राह्मण ने पूजा-घर से निकलकर देखा तो अचरज में रह गया। उसने सोचा—यह सब महाशक्ति की ही लीला है। ब्राह्मण की दोनों आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली।

अंतिम दिन ब्राह्मण पूजा में बैठकर दुर्गामाई को

दही-कड़वा का भोग लगाने लगे। आज मां की विदाई होगी। इसीलिए ब्राह्मण को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह आंखें बंद करके मां का ध्यान कर रहा था। इसी समय सर्वमंगला वहां आकर देवी को चढ़ाया हुआ दही-कड़वा खाने लगी। हठात् ब्राह्मण ने देखकर कहा, "बेटी, यह क्या!" सर्वमंगला झटपट चली गई।

ब्राह्मणी ने फिर दही-कड़वा का बंदोबस्त कर दिया। इस बार भी सर्वमंगला ने सब खा डाला। ब्राह्मणी ने फिर बंदोबस्त किया। इस बार भी सर्वमंगला चट कर गई। ब्राह्मण ने बहुत परेशान होकर कहा, "तुझे आज हो क्या गया है? जा, निकल यहां से?"

ब्राह्मणी फिर दही-कड़वे का बंदोबस्त कर ही रही थी कि सर्वमंगला ने कहा, "मां, बाबा ने मुझे आज यहां से चले जाने को कहा है। मैंने तीन दिन पेट भर-कर नहीं खाया। मुझे बड़ी भूख लगी है। जाना भी बड़ी दूर है। इसलिए मैंने खा लिया। इसपर बाबा ने मुझे चले जाने को कहा। मां, मैं जा रही हूं।"

ब्राह्मणी ने लौटकर देखा तो लड़की दिखाई नहीं दी। उसने तुरंत जाकर अपने पति से सब बात कही। ब्राह्मण ने मन-ही-मन सोचा कि बड़ी लड़की है। लगता है, गुस्सा होकर अकेली चली गई।

पूजा पूरी होने पर वह लड़की के घर पहुंचा। सीधा

लड़की के पास जाकर बोला, "बेटी, पूजा के समय तूने गड़बड़ की, इससे मैंने तुझे डांट दिया था। इसीसे तू नाराज होकर चली आई।"

लड़की ने कहा, "बाबा, मैं आपके घर कब गई थी?"

अब ब्राह्मण ने समझा कि दुर्गामाई ही उसकी लड़की का रूप धरकर आई थीं। देवी की बात सोचकर ब्राह्मण आनंद से पागल हो उठा। उसकी दोनों आंखें आंसुओं से भरी थीं और मुंह में था बस—मां-मां!"

: ५ :

गो-हत्या

एक ब्राह्मण को बगीचे का शौक था। उसने बहुत रुपये खर्च करके और बड़ी मेहनत से एक सुंदर बगीचा लगाया था। वह खुद बगीचे का काम करता था। एक दिन की बात कि बाग के खुले फाटक से एक गाय बाग में घुस आई और कुछ अच्छे-अच्छे पौधे खाने लगी। ब्राह्मण दूसरी ओर काम कर रहा था। गाय को पौधे खाते देखकर लाठी लेकर दौड़ा। इतनी मेहनत से लगाये पेड़ों को यों चट करते देख ब्राह्मण को बड़ा क्रोध आया। गुस्से के मारे वह गाय को पीटने लगा। मार खाकर गाय भागने लगी, लेकिन एक लाठी उसपर ऐसी जोर की बैठी कि वह गिर पड़ी और छटपटाकर मर गई।

ब्राह्मण सन्न। गाय को मरी देखकर उसे बड़ी चिंता हुई। कोई देख न ले, इस डर से वह जल्दी से गाय को घसीटकर बगीचे के किनारे जंगल में डाल आया।

किसी दूसरे के न देख पाने पर भी ब्राह्मण के मन में बड़ी चिंता हुई। गाय की हत्या तो बड़ा पाप है। आदमी जब कोई अन्याय कर डालता है या करने लगता है तो वह तरह-तरह से मन को यह समझाता है कि जो काम उसने किया है वह अन्याय नहीं था। आदमी इस झूठे विचार से अपने मन को समझा देता है और बेफ़िक्र हो जाता है।

ब्राह्मण के मन में भी इसी तरह का विचार आया। ब्राह्मण ने लड़कपन में थोड़ी संस्कृत पढ़ी थी। उसमें एक जगह आया था कि आदमी के हाथ, पैर, आंख, कान, सबमें एक-एक देवता की शक्ति काम करती है। हाथ का देवता इंद्र है। इंद्र की शक्ति से ही हाथ काम करता है।

ब्राह्मण मन-ही-मन सोचने लगा कि गो-हत्या हुई है। मेरे हाथ ने गाय को लाठी मारी, पर हाथ काम करता है इंद्र की शक्ति से। इसलिए गो-हत्या के लिए इंद्र महाराज जिम्मेदार हैं। पाप उन्हींको लगेगा, मुझे क्या!

यह सोचकर ब्राह्मण बेफ़िक्र बगीचे में काम करने लगा। भला हो या बुरा, काम का फल होता ही है। कुकर्म का फल भोगना ही पड़ता है। गो-हत्या का पाप जब

ब्राह्मण के पास आया तो ब्राह्मण ने उसे धता बताई। बोला, "तुम मेरे पास क्यों आये हो ? गोहत्या क्या मैंने की है ? मेरे हाथ ने इंद्र की शक्ति से गाय को मारा है। गो-हत्या के लिए इंद्र महाराज जिम्मेदार हैं। उन्हींके पास जाओ।"

पाप क्या करता ! इंद्र के पास पहुंचा। इंद्र उसे देखकर चकित हुए। पाप ने इंद्र को सारी बात कह सुनाई। सुनकर इंद्र ने कहा, "भाई, तुम जरा ठहरो। मैं ब्राह्मण से दो बात करके अभी आता हूं।"

एक बूढ़े ब्राह्मण का भेस बनाकर इंद्र बगीचे में आये। बगीचे का मालिक पास ही काम में लगा हुआ था। इंद्र ने मानों उसे देखा ही नहीं। वह बगीचे के पेड़-पौधों की ओर देखकर कहने लगे--"वाह, क्या सुंदर बगीचा है ! सुंदरता की कैसी परख है ! कौन है इस बगीचे का मालिक ? किसने यह अनुपम बाग लगाया है ! देखकर आंखें तृप्त हो जाती हैं।"

इंद्र ने ये बातें इस तरह कहीं कि ब्राह्मण उन्हें सुन ले।

ब्राह्मण ने देखा, एक बूढ़ा बगीचे में है और बगीचे की तारीफ कर रहा है। तारीफ सुनकर ब्राह्मण फूला नहीं समाया। फौरन बूढ़े के पास आकर खड़ा हो गया। ब्राह्मण को सामने देखकर इंद्र ने कहा, "वाह, कैसा,

अद्‌भुत बगीचा है! किसका है यह ?

ब्राह्मण ने कहा, "जी, यह मेरा ही है।"

बूढ़ा बोला, "ओहो, आपका है। अहा धन्य है आपका यह बाग और धन्य हैं आप। कैसे करीने से पेड़ लगाये हैं आपने! कितनी मेहनत से इन सबोंको आप पाल रहे हैं। आप तो बाग की कला के जानकार मालूम होते हैं। यह सब क्या आपने किया है ?"

ब्राह्मण ने जवाब दिया, "जी हां, यह सब जो आप देख रहे हैं, इन हाथों की बदौलत हुआ है।"

बूढ़े ने कहा, "खूब भाई, खूब। चलो, जरा तुम्हारे बाग में एक चक्कर लगा लें।"

ब्राह्मण बड़ी खुशी से बूढ़े को एक-एक करके सब दिखलाने लगा। बातें करते हुए दोनों आदमी घूमने लगे। एक सुंदर पेड़ को देखकर इंद्र ने कहा, "वाह, यह पेड़ तुम्हें कहां से मिला ? इधर तो यह पेड़ मिलता नहीं है।"

ब्राह्मण बोला, "जी, बड़ी मुश्किल से और बड़ी मेहनत से मैंने इसे मिथिला से मंगवाया था। ओह, इसको जिलाने में मुझको कितना खून पसीना एक करना पड़ा। यह जो लता सामने देख रहे हैं, वह मैंने गंधार से मंगाई है।"

बूढ़े ने कहा, "सब काम अपने आप ही करते हो, भाई ?"

"जीहां, मैं अपने हाथ से ही सब काम करता हूं। नौकर-चाकरों से यह सब नहीं हो पाता।"

"अच्छा, तुमने ही सब पेड़ अपने हाथ से लगाये हैं?"

"जी हां, मैंने ही लगाये हैं।"

"तुमने ही पेड़ों को सींचा है?"

"जीहां, मैं ही खाद देता हूं, मैं ही सींचता हूं, मैं ही रखवाली करता हूं।"

इस प्रकार की बातें करते हुए और बगीचा देखते हुए वे बाग के एक छोर पर जा पहुंचे। पास ही वह मरी हुई गाय पड़ी थी। जैसे अचानक गाय सामने आ गई हो, बूढ़ा चौंककर बोला, "अरे, इस गाय को किसने मारा?"

ब्राह्मण इतनी देर से सब बातों के लिए कह रहा था कि मैंने की, मैंने की—इसलिए इस सवाल के जवाब में यह न कह सका कि यह गाय मैंने नहीं मारी, इंद्र ने मारी है। जवाब न सूझ पाने के कारण ब्राह्मण चुप रहा। तब इंद्र ने अपने असली भेस में आकर कहा, "भाई, मेरा नाम इंद्र है। जो कुछ अच्छा है, तारीफ के लायक है, वह सब करने के समय तुम और गाय मारने के समय इंद्र, यह कैसे हो सकता है? जिसने बाग लगाया, उसीने गाय मारी। इस पाप को तुम संभालो मैं जा रहा हूं।"

: ६ :

साधु का उपदेश

एक बहुत बड़ा मैदान था। उसके बीच-बीच में बड़े-बड़े पेड़ थे। चारों ओर उसके गांव थे। कितने ही लोगों की बस्ती थी। गांव के ग्वाले रोज सुबह वहां गाय चराने लाते। वे पेड़ के नीचे बैठकर भूंजा खाते, खेलते, बांसुरी बजाते, गायें चारों ओर चरती रहतीं। उसी मैदान के बीच में एक भयंकर सांप रहता था। गाय, बछड़ा, आदमी जो उसके बिल के पास पहुंच जाता, सांप दौड़कर उसे डस लेता। कितना जहरीला काला नाग था वह ! जिसे काटता, वह चिल्लाकर वहीं ढेर हो जाता। सांप के डर से कोई उधर नहीं जाता था।

एक दिन एक साधु उस रास्ते से निकला। गांववालों ने चिल्लाकर कहा, "महाराज, उधर मत जाओ। वहां एक बड़ा भयानक सांप है। जो उधर जाता है, उसको बिना काटे नहीं रहता। उसका इतना तेज जहर है कि काटने के साथ ही आदमी ढेर हो जाता है। आप उधर से मत जाओ।"

साधु ने कहा, "मैं सांप का मंत्र जानता हूं। वह मुझे नहीं काट सकेगा।"

यह कहकर साधु उसी रास्ते जाने लगा। लोग

डरते-डरते दूर से देखने लगे कि आगे क्या होता है।



साधु जा रहा था। बिल के पास पहुंचते ही सांप निकला और फुफकारकर फन फैला दिया। तुरंत साधु ने एक मंत्र पढ़ा। मंत्र का अद्‌भुत चमत्कार था। सांप एकदम केंचुए की तरह हो गया। सांप की हालत देखकर साधु के मन में दया उपजी। उसने उसे उपदेश देकर कहा, "देख, इतने दिनों में तूने कितने प्राणियों की हत्या कर डाली। वह पाप तेरे सिर पर लदा हुआ है। मरने के बाद क्या होगा, तूने कभी इसपर विचार किया है ?"

साधु के उपदेश से सांप चेता। उसने समझा कि सचमुच मैंने बड़ा पाप किया है। वह साधु का चेला हो गया। साधु ने उसको मंत्र देकर कहा, "रोज इस मंत्र का जप करना और अब किसीको मत काटना।"

यह कहकर साधु चला गया। बड़ी भक्ति से सांप गुरु-मंत्र का जाप करने लगा। उस दिन से वह किसी को न डराता, न काटता। कुछ दिन इसी तरह बीते। ग्वालों ने देखा कि सांप फन नहीं फैलाता, गाय, बछड़ों के पास जाने पर भी कुछ नहीं बोलता। तब वे दूर से उसे ढेला मारने लगे। सांप उनकी ओर निगाह उठाकर भी न देखता। ग्वालों ने समझ लिया कि यह सब साधु के मंत्र का प्रभाव है। धीरे-धीरे उन सबकी हिम्मत बढ़ने लगी। एक दिन लाठी से उन्होंने सांप को इतना मारा कि बेचारा अधमरा हो गया।

सबने समझ लिया कि वह मर गया। एक दुष्ट लड़के ने पूंछ पकड़कर उसे दूर फेंक दिया।

सांप मरा नहीं था। मार से बेहोश हो गया था। बहुत रात गये उसको होश आया। इसके बाद धीरे-धीरे बड़ी कठिनाई से वह बिल में जाकर पड़ा रहा। कुछ दिनों तक शरीर की पीड़ा से हिल-डुल तक नहीं सकता था। उसके बाद धीरे-धीरे अच्छा हो गया। ग्वालों के डर से दिन में वह बाहर नहीं आता था। खुराक की तलाश में

रात को बाहर निकलता था। सबने सोचा कि वह मर गया।

बहुत दिनों के बाद वही साधु उधर आ निकला। उसको पहचानकर ग्वालों ने बड़ी भक्ति से कहा, "महाराज, वह सांप मर गया।" साधु को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। वह जानता था कि मंत्र का साधन हुए बिना सांप नहीं मरेगा। वह सांप के बिल के पास जाकर जोर-जोर से पुकारने लगा।

गुरूजी की पुकार सुनकर सांप ने बिल से बाहर आकर उन्हें प्रणाम किया। बहुत दिनों के बाद गुरू का दर्शन पाकर उसे बड़ी खुशी हुई। गुरू ने पूछा, "कहो, तुम्हारा क्या हाल है ?"

सांप ने कहा , "महाराज, आपकी कृपा से मेरे दिन बहुत आराम से बीतते हैं।"

"तो इतने बीमार कैसे लगते हो ?" साधु ने पूछा।

गुरू के उपदेश और साधना के गुण से सांप के मन से हिंसा का भाव बिल्कुल दूर हो गया था और ग्वालों ने उसको मारा था, यहतक वह भूल गया था।

सांप ने कहा, "आपने हिंसा करने को बिल्कुल मना कर दिया था। पेड़ से गिरे पत्ते और सूखी घास खाकर गुजर करता हूं, इसलिए कुछ कमजोर लगता हूं।"

"नहीं, इससे प्राणी इतना कमजोर नहीं हो सकता

सोचकर देखो, कोई और वजह होगी।"

गुरू की बात पर सांप सोचने लगा। बहुत सोचते-सोचते उसको याद आया कि ग्वालों ने उसको एक दिन बहुत मारा था। उसने कहा, "आप ठीक कहते हैं, महाराज। यह देखकर कि मैं किसीको नहीं काटता, ग्वालों ने एक दिन मुझको बहुत मारा था। वे नादान जो ठहरे। उन्हें मेरी हालत का क्या पता लगता।"

गुरू ने सब समझ लिया। सांप को उलाहना देकर कहा, "तुम बड़े बेवकूफ हो। तुम्हें काटने को मना किया था, फुफकारने को नहीं। कोई मारने आवे तो आज से तुम फुफकारना।"

यह कहकर साधु चला गया। उसके बाद सांप दिन में खुराक की तलाश में घूमने लगा। ग्वाले उसे देखकर चिल्ला उठे, "अरे, सांप मरा नहीं, मरा नहीं। फिर निकल आया। भागो, भागो।" यह कहकर ग्वाले लाठी हाथ में लेकर उसे मारने चले। ज्योंही वे पास पहुंचे सांप पहले की तरह फन आगे निकालकर फुफकारने लगा। लड़के जिधर जिसका सींग समाया उधर भागे। उस दिन से कोई भी सांप के पास नहीं फटकता। सांप भी निडर होकर जिधर मन आता है, घूमता है।

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१ बदरीनाथ
२ जंगल की सैर
३ भीष्म पितामह
४ शिवि और दधीचि
५ विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७ गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गाव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना